

कृष्णा सोबती

से कृष्णा सोबती तक



संपादक
ए. अरविंदाक्षन



प्रकाशक
प्रतिश्रुति प्रकाशन
7ए, बेंटिक स्ट्रीट
कोलकाता-700 001
दूरभाष : 9330010032
mail.prakashan@gmail.com

© ए. अरविंदाक्षन

प्रथम संस्करण : 2021

शब्दांकन, आवरण-आकल्पन
प्रतिश्रुति कला विभाग

मुद्रक

मंजरी इंटरप्राइजेज

62, हेमंत बसु सरणी, कोलकाता-700 001

मूल्य : ₹ 640.00

KRISHNA SOBTI SE KRISHNA SOBTI TAK
Ed. by A. Arvindakshan

Printed in India

ISBN : 9789384012-18-2

भूमिका

कृष्णा सोबती : मुहावरों के बावजूद पीड़ा का राग/मृदुला गर्ग	...7
कृष्णा सोबती : साहित्य की महानायक/लीलाधर मंडलोई	...9
एक लड़की की अजेय कथा : चन्ना/भारती गोरे	...15
डार से बिछुड़ी : स्त्री जीवन का त्रासद यथार्थ/आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	...20
मुझ तक मेरे हिस्से की धूप आने दे/सीमा खान	...29
डार से बिछुड़ी की 'पाशो'/पी. लता	...37
अदीखे दर्द की दास्तान : तीन पहाड़/रश्मी कृष्णन	...49
प्यासी तलहटी के इर्द-गिर्द खिला सूर्यमुखी/बी. अशोक	...54
बदबू आ कहाँ से रही है/तेजस्वरूप त्रिवेदी	...60
जिंदगीनामा : एक पुनर्मूल्यांकन/राजम पिल्लै	...63
ऐ लड़की : एक स्वस्थ जीवन-दृष्टि/के. शैलजा	...68
दिलो-दानिश : लाल बही के पन्नों से निकली दास्तान/रेणु व्यास	...74
नवा-ए राज है, ऐ दोस्त या तेरी आवाज/शशिकला राय	...81
सांध्यबेला का आईना/प्रीति सागर	...92
रूढ़िमुक्त स्त्री का अनोखा सरगम : समय सरगम/सुधा बालकृष्णन	...97
रचनात्मक अभिव्यक्ति और जैनी मेहरबान सिंह/राम विनोद रे	...110
नागरिक की स्मृतियों में कैद समय/भीम सिंह	...114
बहुपरतीय मन के मचलते-सुबकते स्पंदन/शान्ती नायर	...119
कृष्णा सोबती की कहानी का यथार्थ/सीमा चन्द्रन	...129
प्रतिरोध जीने की अनिवार्य शर्त है/मनोज पाण्डेय	...141
उल्लास और विकलता में स्त्री जीवन/सूरज पालीवाल	...148
रत्ती, मित्रो, अम्मु/प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	...160
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री/अनुपमा तिवारी	...168
नारी वृत्त संचार की वाहिका/अरुण शीतांश	...178
	...186

डार से बिछुड़ी : स्त्री जीवन का त्रासद यथार्थ

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

हिंदी कथा संसार में एक सजग आत्मचेतस लेखक के रूप में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। अतीत जीवन के पृष्ठों को पलटते हुए अपने समय-समाज के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती उनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में 'घटना' की तरह प्रकट होती हैं तथा अपनी भावात्मक ऊर्जा एवं कलात्मक उत्तेजना के चलते पाठकों के दिलो-दिमाग पर छा जाती हैं। पुरुषप्रधान भारतीय समाज में स्त्री के दुःख-दर्द, उसकी नियति और उसके मानस को खोलकर स्त्री जीवन की वास्तविकताओं एवं विडम्बनाओं से हमारा साक्षात्कार कराते हुए पितृसत्तात्मक व्यवस्था की कुत्सित, रूढ़िवादी मानसिकता को बेनकाब करने की गंभीर चुनौती को कृष्णा सोबती जिस सृजनात्मक साहस के साथ स्वीकारती हैं, वह स्त्री सशक्तीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उल्लेखनीय है कि स्त्री की मानवीय इयत्ता को पाने एवं जीने का स्वप्न रचनेवाली कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं में स्त्री अस्तित्व एवं अस्मिता को रेखांकित करते हुए न सिर्फ शोषण के विविध संदर्भों को चिह्नित किया है, बल्कि स्त्री को उसकी स्टीरियोटाइप छवि से मुक्त, पुरुष के समानान्तर एक सबल, आत्मनिर्भर, दृढ़ 'मानवी' की पहचान देकर हिन्दी स्त्री लेखन को एक नया आयाम दिया है।

डार से बिछुड़ी कृष्णा सोबती का पहला उपन्यास है जो 1958 में प्रकाशित होने से पूर्व इलाहाबाद से निकलने वाली निकष पत्रिका में छपा था। उन दिनों निकष के संपादक धर्मवीर भारती थे जिन्हें यह कृति बेहद पसंद आई थी। उपन्यास का गतिशील कथानक व उसमें विन्यस्त सामाजिक यथार्थ, आंचलिक परिवेश और विलक्षण कथा-भाषा के कारण प्रायः सभी बड़े आलोचकों ने कृष्णा सोबती की इस पहली दस्तक को गंभीरता से लिया और हिंदी कथा लेखन में उनके आगाज को नये स्त्री स्वर के रूप में मान्यता दी। डार से बिछुड़ी के लघु कलेवर को देखते हुए अक्सर प्रश्न उठता है कि इसे 'उपन्यास' की संज्ञा दी जाए या 'लंबी कहानी' माना जाए। गोपाल राय इसे 'उपन्यासिका' कहते हैं